॥ श्रीः ॥

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

७

श्रीधनञ्जयविरचितं

दशरूपकम्

(सावलोकम्)

'चन्द्रकला'-हिन्दी-व्याख्योपेतम्

व्याख्याकार—

डॉ० भोलाशङ्कर व्यास

एम. ए., पी-एच. डी., एल. एल. बी., शास्त्री

अध्यापक, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

चौखम्बा विद्याभवन

वाराणसी २२१००१

THE
VIDYABHAWAN SANSKRIT GRANTHAMALA
7

DASARŪPAKAM

OF

DHANANJAYA

Containing

'AVALOKA' SANSKRIT COMMENTARY OF DHANIKA

Edited with

'CANDRAKALĀ' HINDI COMMENTARY

By

Dr. Bholashankar Vyas

M. A., Ph. D., L. L. B., Shastri

Reader, Hindi Deptt , Banaras Hindu University

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

VARANASI-1

विषय-सूची

भूमिका १३-६३

संस्कृत नाटक की उत्पत्ति व विकास–नाटक का मूल अनुकरणवृत्ति–भारतीय मत–वैदिक संवादों में नाटकीय तत्त्व–पाश्चात्य विद्वानों के मत–पाणिनि, पतञ्जलि तथा कामसूत्र से नाटकों की स्थिति का संकेत–नाट्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास–भरत–भरत के व्याख्याकार–धनञ्जय तथा धनिक का ऐतिहासिक परिचय–नाट्यशास्त्र के परवर्ती ग्रन्थ।

ग्रन्थ का संक्षेप–रूपक उनके भेद व भेदक तत्त्व–कथावस्तु या इतिवृत्त–अर्थप्रकृति, अवस्था, सन्धि तथा सन्ध्यङ्ग–संस्कृत नाटकों में दुःखान्त नाटकों के अभाव का कारण–विष्कम्भक तथा प्रवेश–पताका तथा पताकास्थानक–संवाद के प्रकार, स्वगतादि भेद–नेता के धीरललितादि तथा दक्षिणादि भेद–नायक का परिच्छेद–नायिका–भेद का आधार–रस की पुष्टि–रस के सम्बन्ध में मत–लोल्लट, शंकुक, भट्टनायक तथा अभिनव के मत–धनञ्जय का मत–रसविरोध तथा उसका परिहार।

धनञ्जय व धनिक की मान्यताएँ–व्यञ्जना का खण्डन–रस वाक्यार्थ है–रस तथा विभावादि में भाव्यभावक सम्बन्ध है–धनञ्जय के मत में लोल्लट, शंकुक तथा भट्टनायक के मतों का मिश्रण–शान्त रस के संबंध में धनञ्जय का विचार।

प्राचीन भारतीय रङ्गमञ्च।

प्रथम प्रकाश १-७४

मंगलाचरण तथा ग्रन्थ के उद्देश्यादि का विवेचन–रूपक परिभाषा व भेद–नृत्य तथा नृत्त के भेद–इतिवृत्त के दो भेद–पताका तथा पताकास्थानक–५ अर्थप्रकृतियाँ–५ अवस्थाएँ–५ सन्धियाँ–मुखसन्धि लक्षण तथा १२ अङ्ग–प्रतिमुखसन्धि लक्षण तथा १३ अङ्गगर्भसन्धिलक्षण तथा १२ अङ्ग–अवमर्शसन्धि लक्षण तथा १३ अङ्ग–निर्वहण सन्धि लक्षण तथा १३ अङ्ग–वस्तु का दृश्य तथा सूच्य भेद–सूक्ष्म वस्तु के सूचक ५ अर्थोपक्षेपक–विष्कम्भक के दो भेद–प्रवेशक, चूलिका, अङ्कास्य तथा अङ्कावतार–वस्तु के सर्वश्राव्य आश्रव्य तथा नियतश्राव्य ये तीन भेद–आकाशभाषित–उपसंहार।

द्वितीय प्रकाश ७५-१४६

नायक का लक्षण-उसके ४ भेद-धीरललित, धीरशान्त, धीरोदात्त धीरोद्धत-शृङ्गारी नायक के ४ भेद-दक्षिण, शठ, धृष्ट तथा अनुकूल-उसके सहायक, विट, विदूषक, प्रतिनायक, नायक के सात्त्विक गुण-नायिका के भेद, स्वीया, परकीया तथा सामान्या-मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा तथा ज्येष्ठा, कनिष्ठा आदि १३ भेद-अवस्था के आधार पर नायिका के स्वाधीनपतिकादि ८ भेद। नायिका की सहायिकाएं-नायिका के २० अलङ्कार-नायक के धर्मादि कार्य में सहायक-नायक के व्यवहार (वृत्ति) कैशिकी, कैशिकी के ४ अङ्ग-सात्वती, उसके अङ्ग-आरभटी, उसके अङ्ग-नाटक में पात्रों के उपयुक्त संस्कृत, शौरसेनी प्राकृत तथा मागधीप्राकृत के प्रयोग का नियम-पात्रों के आमन्त्रण (सम्बोधन) का प्रकार।

तृतीय प्रकाश १४७-१८१

नाटक-पूर्वरङ्ग-भारती वृत्ति-भारती के प्ररोचनादि भेद-प्रस्तावना (आमुख) के तीन प्रकार-वीथ्यङ्ग-नाटक का इतिवृत्त-नायकानुचित इतिवृत्तांश का परित्याग-अङ्कविधान-नाटक में वीर तथा शृंगार रस-अङ्क में पात्रों की संख्या व प्रवेश तथा निर्गम-प्रकरण-नाटिका-भाण-प्रहसन-डिम-व्यायोग-समवकार-वीथी-अङ्क-ईहामृग।

चतुर्थ प्रकाश १८२-२९२

रस-विभाव-आलम्बन तथा उद्दीपन-अनुभाव-भाव का लक्षण-सात्त्विक भाव-व्यभिचारी भाव-३३ व्यभिचारियों का सोदाहरण लक्षण-स्थायीभाव तथा भाव-विरोध पर विचार-शान्तरस तथा उसके स्थायी-शान्त का निषेध-भावादि का काव्य से सम्बन्ध-व्यञ्जनावादी के पूर्वपक्षी मत का उद्धरण-सिद्धान्तपक्ष की स्थापना—काव्य का वाक्यार्थ स्थायीभाव ही है-रस सामाजिक में रहता है-रसास्वाद के प्रकार-आस्वाद का लक्षण तथा भेद-आठ रसों की संज्ञा-शान्तरस के विषय में पुनः विचार-शृंगार रस-संयोग तथा अयोग शृङ्गार-अयोग शृंगार के ३ भेद-प्रवास, प्रणयमान तथा ईर्ष्यामान-मान के हटाने के उपाय-करुण तथा अयोग शृंगार का भेद-वीररस-बीभत्सरस-रौद्ररस-हास्यरस-हास्य के ६ भेद-अद्भुत रस-भयानक रस-करुणरस-प्रीति, भक्ति आदि का इन्हीं में अन्तर्भाव-भूषणादि का भी इन्हीं में अन्तर्भाव-उपसंहार।